ISSN 2349-638X

REVIEWED INTERNATIONAL JOURNAL

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

MONTHLY PUBLISH JOURNAL

VOL-I | ISSUE-III | AUG | 2014

Address
- Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
- Tq. Latur, Dis. Latur 413512
- (+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
- editor@aiirjournal.com
- aiirjpramod@gmail.com

Website
- www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

दुष्यंत कुमार तथा जहीर कुरेशी की ग़ज़लों में सामाजिक तथा राजनीतिक चेतना

डॉ.जोगेंद्रसिंह बिसेन
उपप्राचार्य
दयानंद कला महाविद्यालय,
लातूर.

भारतीय साहित्य का अध्ययन करनेपर भारत में ग़ज़ल की विशाल एवं संपन्न परंपरा दिखाई देती हैं। प्रारंभ में स्त्री–पुरूष प्रेम की बातों को व्यक्त करना यही ग़ज़ल का लक्ष्य था । जिसमें विरह की प्रधानता थी, साक़ी और पैमाने तक ही इसकी विषय वस्तु सीमित थी। समय के साथ इसमें परिवर्तन आता गया तथा वर्तमान समय में समाज के सभी क्षेत्रों की अभिव्यक्ति ग़ज़लों में दिखाई देती है।

साहित्य समाज का दर्पण होने के कारण साहित्यिक विधा ग़ज़ल में भी समाज का चित्रण स्वाभाविक है। प्रस्तुत आलेख में दुष्यंत कुमार का ग़ज़ल संग्रह 'साये में धूप' तथा 'जहीर कुरेशी की चुनिंदा ग़ज़लें' संग्रह में व्यक्त सामाजिक चेतना को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। वर्तमान समय में मात्र प्रेमी–प्रेमिका की विरह व्यथा को व्यक्त करनेवाली ग़ज़लें नही हैं इसमें सामाजिक यथार्थ जहॉ–तहॉ दिखाई देता है। समाज की स्थितियों के प्रति कवि का आक्रोश से भरा स्वर चीख उठता है। जहीर कुरेशी 'चांदनी का दु:ख' में लिखते हैं–

''किस्से नहीं है ये किसी विरहन की पीर के,
ये शेर हैं–अंधेरों से लड़ते जहीर के।''[1]

तो स्वाधिनता के बाद की देश की स्थितिका दुष्यंत कुमार केवल बयान नहीं करते वे इसमें परिवर्तन चाहते हैं। १९७५ में प्रकाशित 'साये में धूप' में दुश्यंत लिखते हैं–

''सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।''[2]

'साये में धूप' में दुश्यंत कुमार ने आम आदमी की व्यथा को शब्दबद्ध किया है। देश में आज भूखमरी है, बेरोजगारी है, गरीबी है। १९४७ में देश आज़ाद हुआ किंतु आज़ादी के बाद भी इन प्रश्नों को हमारे राजनीतिक नेता समाप्त नही कर पाये। स्वाधिनता के पश्चात् हमारे सपने पूरे नहीं हुये, व्यवस्था में कोई उचित बदलाव नहीं आया। परिणाम निराशा का स्वर दुश्यंत की ग़ज़लों में उभर आता है।

''कहां तो तय था चिरागां हरेक घर के लिए,
कहां चिराग मयस्सर नहीं ाहर के लिए।''[3]

इसी बात को जहीर जी १९८५ में प्रकाशित 'चांदनी का दु:ख' में व्यक्त करते हैं–

''लोग संसद में विगत चालीस वर्षों से,
कर रहे हैं भूखमरी को हल विवादों में।''[4]

हम तो यह कहेंगे की आज़ादी प्राप्त हुए ६७ वर्ष हो गये लेकिन आम जनता के प्रश्न वैसे ही बने है। डॉ.सिद्धनाथ कुमार की दृ टी में **''दुश्यंत कुमार ने अपनी ग़ज़लों में मुख्य रूप से सामाजिक अनुभूतियों को ही अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया है। कवि का माध्यम अधिकांशत: परिवेश की अनुभूतियों पर ही रहा है।''**[5]

जनता में भी कोई चेतना नहीं है, वह सारे अन्याय सहती चली जा रही है। समाज की अन्याय सहने की प्रवृत्ति को उजागर करते हुए दुश्यंत कुमार लिखते हैं–

''न हो कमीज़ तो पांवों से पेट ढंक लेंगे,
ये लोग कितने मुनासिब हैं, इस सफर के लिए।''[6]

समाज के सभी क्षेत्रों में आज अव्यवस्था, दुर्व्यवहार तथा भ्रष्टाचार है। समाज के इस यथार्थ को अपनी गज़ल के शेर के माध्यम से दुश्यंत कुमार अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं –

''इस सड़क पर इस क़दर कीचड़ बिछी है,
हर किसी का पांव घुटनों तक सना है।''[7]

जनता सारे अन्याय अत्याचार सहती है। मानों अन्याय सहने की उसे लत लग गयी है। उसका स्वभाव बन गया है। जहीर जी 'भीड़ में सबसे आगे' में अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हैं–

''एक भी अन्याय का करते नहीं तनकर विरोध,
खुद को कालीनों की शैली में बिछा लेते हैं लोग।''[8]

महानगरीय जीवन में बढ़ती विद्रुपता और कुप्रवृत्तियों को भी ग़ज़लकारों ने अपनी ग़ज़लों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है।

''ये महानगरीय जीवन का करिश्मा है,
भूल बैठे हम सुखी परिवार की भाषा
सभ्यता के कौन–से युग में खड़े हैं,
बोलते हैं युद्ध के बाज़ार की भाषा।''[9]

आज समाज में आये दिन नारी–जाति पर अन्याय हो रहे हैं। कभी वह दहेज की शिकार होती है तो कभी वासना की। गर्भ में पनपते बच्चों की हत्याओं का प्रमाण बढ़ रहा है। शहर से लेकर गांव तक नारी जाति पर अन्याय–अत्याचार हो रहे हैं। जहीर जी लिखते हैं–

''आज के इस दौर में भी क्या नही होता,
गांव से लेकर शहर तक नारियों के साथ।''[10]

किंतु महिलाओं पर हो रहे इस अन्याय का विरोध करने के लिए महिलाएं आगे बढ़ रही है। अब वह अन्याय नही सहेगी वह अपना अस्तित्व निर्माण करना चाहती है। वह अपने अधिकार की लढ़ाई लढ़ रही है। आज स्त्री चार दिवारों में बंद नहीं रहती सभी क्षेत्र में महिलाएं कार्य कर रही हैं। स्त्री–विमर्श के माध्यम से स्त्री अपनी पहचान बना रही है। जागृत होती नारी चेतना के संबंध में जहीर कुरेशी 'समंदर ब्याहने आया नहीं है' में इसी बात को व्यक्त करते हुए लिखते हैं–

"जब भी औरत ने अपनी सीमा–रेखा को पार किया,
पर–गमन से पहले, खुद को कितने दिन तैयार किया।"[11]

समाज में आज धर्म तथा जाति के नाम पर संघ ा है। बढ़ती सांप्रदायिकता और नष्ट होती बंधुता एवं मनुष्यता का चित्रण भी ग़ज़लकारों ने किया है। डॉ.अविनाश कासांडे के शब्दों में

"सांप्रदायिक सद्भाव एवं समानता, बंधुता
समाज से नष्ट होती जा रही है...
...सामान्य व्यक्ति की साशंकता और भयभीतता का चित्रण दुश्यंत जी ने किया है।"[12]

धर्म के नाम पर चल रहे संघर्ष एवं विघटन को व्यक्त करते हुए जहीर कुरेशी लिखते हैं–

"धर्म पर इतने मतांतर हो गए,
ईश–वंदन के कई टुकडे हुए।"[13]

भारतीय समाज की विभि ाका को व्यक्त करते हुए दुश्यंत जी लिखते हैं–

"इस कदर पाबंदी–ए–मजहब की सदके आपके,
ज़ब से आज़ादी मिली है मुल्क में रमज़ान है।
कल नुमाइश में मिला वो चिथड़े पहने हुए,
मैंने पूछा नाम तो बोला कि हिंदुस्तान है।"[14]

आज समाज में सुख, चैन, अमन, शांति नहीं हैं। आज व्यक्ति दिन–ब–दिन संकुचित होता चला जा रहा है। मनुष्य में मनुष्यता दिखाई नहीं देती। मनुष्य के जीवन का कोई लक्ष्य होना चाहिए किन्तु लक्ष्य विहीन जीवन व्यतित करनेवाले लोगों की संख्या समाज में काफी है। दुश्यंत कुमार लिखते हैं–

"जिन्दगानी का कोई मक़सद नहीं है,
एक भी क़द आज आदमक़द नहीं है।"[15]

वोट की राजनीति में राजनेता अपना उत्तरदायित्व भूल गये हैं। आज देश की जनता इस सियासत की शिकार बनी है। जहीर जी के शब्दों में–

"सब जानते हैं जिसको सियासत के नाम से,
हम भी कहीं निशाने हैं उस खास तीर के।"[16]

ये सारे प्रश्न क्यों हैं? कारण मनुष्य चुप है, खामोश है। जनता अन्याय सहती है इसीलिए अन्याय बढ़ते जा रहे हैं। ज़माने का यही दस्तुर है जहीर जी के शब्दों में–

"निर्बल कोई भी हो–औरत, हरिजन अथवा शीश महल,
निर्बल पर ताकतवर ने, हर युग में अत्याचार किया है।"[17]

जब जनता इन प्रश्नों के खिलाप उठ खड़ी होगी तो इन प्रश्नों का समाधान होगा। दुश्यंत कुमार लिखते हैं–

''कैसे आकाश में सूराख नहीं हो सकता,
एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारो।''[18]

निष्कर्ष :

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि–

- हिंदी ग़ज़ल प्रेमी–प्रेमिओं की विरह वेदना तक़ सीमित नही हैं उसमें सामाजिक यथार्थ एवं सामाजिक चेतना दिखाई देती है।
- महानगरीय सभ्यता, सांप्रदायिकता के कारण निर्मित प्रश्नों को हिंदी ग़ज़लकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से व्यक्त किया है।
- महिलाओं पर हो रहे अन्याय भी इसकी विषय वस्तु बने हैं।
- राजनीति पर भी आघात करने का ग़ज़लकारों ने प्रयास किया है।
- समाज में चेतना निर्माण करते हुए इन प्रश्नों का समाधान ग़ज़लकार चाहते हैं। अत: मनुश्यता से युक्त समाज के निर्माण में हिंदी ग़ज़ल अपना अनमोल योगदान दे रही है।

संदर्भ संकेत सूची :

१. जहीर कुरेशी की चुनिंदा ग़ज़लें – मधु खराटे, पृ.६९
२. साये में धूप – दुष्यंत कुमार पृ.३०
३. वही – वही, पृ. १३
४. जहीर कुरेशी की चुनिंदा ग़ज़लें – मधु खराटे, पृ.७८
५. ग़ज़लकार दुश्यंत कुमार – डॉ.अविनाश कासांडे, पृ.१८९–१९०
६. साये में धूप – दु यंत कुमार पृ.१३
७. वही – वही, पृ.२७
८. जहीर कुरेशी की चुनिंदा ग़ज़लें – मधु खराटे, पृ.९३
९. वही – वही, पृ.१०५
१०. वही – वही, पृ.९२
११. वही – वही, पृ.७३
१२. ग़ज़लकार दुश्यंत कुमार – डॉ.अविनाश कासांडे, पृ. १९०
१३. जहीर कुरेशी की चुनिंदा ग़ज़लें – मधु खराटे, पृ.११५
१४. साये में धूप – दु यंत कुमार पृ.५७
१५. वही – वही, पृ.४१
१६. जहीर कुरेशी की चुनिंदा ग़ज़लें – मधु खराटे, पृ.६९
१७. वही – वही, पृ.७३
१८. साये में धूप – दुष्यंत कुमार पृ.४९